रविवार 30 जून, 2019

विषय — क्रिश्चियन साइंस

स्वर्ण पाठः उत्पत्ति 1 : 3, 4

"तब परमेश्वर ने कहा, उजियाला हो: तो उजियाला हो गया। और परमेश्वर ने उजियाले को देखा कि अच्छा है।"

उत्तरदायी अध्ययन: **यशायाह 60 : 1-4, 19-21**

1 उठ, प्रकाशमान हो; क्योंकि तेरा प्रकाश आ गया है, और यहोवा का तेज तेरे ऊपर उदय हुआ है।
2 देख, पृथ्वी पर तो अन्धियारा और राज्य राज्य के लोगों पर घोर अन्धकार छाया हुआ है; परन्तु तेरे ऊपर यहोवा उदय होगा, और उसका तेज तुझ पर प्रगट होगा।
3 और अन्यजातियां तेरे पास प्रकाश के लिये और राजा तेरे आरोहण के प्रताप की ओर आएंगे॥
4 अपनी आंखें चारो ओर उठा कर देख; वे सब के सब इकट्ठे हो कर तेरे पास आ रहे हैं; तेरे पुत्र दूर से आ रहे हैं, और तेरी पुत्रियां हाथों-हाथ पहुंचाई जा रही हैं।
19 फिर दिन को सूर्य तेरा उजियाला न होगा, न चान्दनी के लिये चन्द्रमा परन्तु यहोवा तेरे लिये सदा का उजियाला और तेरा परमेश्वर तेरी शोभा ठहरेगा।
20 तेरा सूर्य फिर कभी अस्त न होगा और न तेरे चन्द्रमा की ज्योति मलिन होगी; क्योंकि यहोवा तेरी सदैव की ज्योति होगा और तरे विलाप के दिन समाप्त हो जाएंगे।
21 और तेरे लोग सब के सब धर्मी होंगे; वे सर्वदा देश के अधिकारी रहेंगे, वे मेरे लगाए हुए पौधे और मेरे हाथों का काम ठहरेंगे, जिस से मेरी महिमा प्रगट हो।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. **यूहन्ना 1 : 1-5**

1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।
3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।
4 उस में जीवन था; और वह जीवन मुनष्यों की ज्योति थी।
5 और ज्योति अन्धकार में चमकती है; और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया।

2. भजन संहिता 119 : 18

18 मेरी आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।

3. भजन संहिता 36 : 5-9

5 हे यहोवा तेरी करूणा स्वर्ग में है, तेरी सच्चाई आकाश मण्डल तक पहुंची है।
6 तेरा धर्म ऊंचे पर्वतों के समान है, तेरे नियम अथाह सागर ठहरे हैं; हे यहोवा तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है॥
7 हे परमेश्वर तेरी करूणा, कैसी अनमोल है! मनुष्य तेरे पंखो के तले शरण लेते हैं।
8 वे तेरे भवन के चिकने भोजन से तृप्त होंगे, और तू अपनी सुख की नदी में से उन्हें पिलाएगा।
9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश पाएंगे॥

4. मत्ती 8 : 5-10, 13

5 और जब वह कफरनहूम में आया तो एक सूबेदार ने उसके पास आकर उस से बिनती की।
6 कि हे प्रभु, मेरा सेवक घर में झोले का मारा बहुत दुखी पड़ा है।
7 उस ने उस से कहा; मैं आकर उसे चंगा करूंगा।
8 सूबेदार ने उत्तर दिया; कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं, कि तू मेरी छत के तले आए, पर केवल मुख से कह दे तो मेरा सेवक चंगा हो जाएगा।
9 क्योंकि मैं भी पराधीन मनुष्य हूं, और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक से कहता हूं, जा, तो वह जाता है; और दूसरे को कि आ, तो वह आता है; और अपने दास से कहता हूं, कि यह कर, तो वह करता है।
10 यह सुनकर यीशु ने अचम्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे उन से कहा; मैं तुम से सच कहता हूं, कि मैं ने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया।
13 और यीशु ने सूबेदार से कहा, जा; जैसा तेरा विश्वास है, वैसा ही तेरे लिये हो: और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया॥

5. यूहन्ना 3 : 16-21

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर
विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।
17 परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत
उसके द्वारा उद्धार पाए।
18 जो उस पर विश्वास करता है, उस पर दंड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह
दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उस ने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।
19 और दंड की आज्ञा का कारण यह है कि ज्योति जगत में आई है, और मनुष्यों ने अन्धकार को ज्योति से अधिक
प्रिय जाना क्योंकि उन के काम बुरे थे।
20 क्योंकि जो कोई बुराई करता है, वह ज्योति से बैर रखता है, और ज्योति के निकट नहीं आता, ऐसा न हो कि
उसके कामों पर दोष लगाया जाए।
21 परन्तु जो सच्चाई पर चलता है वह ज्योति के निकट आता है, ताकि उसके काम प्रगट हों, कि वह परमेश्वर
की ओर से किए गए हैं।

6. यूहन्ना 8 : 12

12 तब यीशु ने फिर लोगों से कहा, जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु
जीवन की ज्योति पाएगा।

7. यूहन्ना 14 : 12-18

12 मैं तुम से सच सच कहता हूं, कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन इन
से भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।
13 और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूंगा कि पुत्र के द्वारा पिता की महिमा हो।
14 यदि तुम मुझ से मेरे नाम से कुछ मांगोगे, तो मैं उसे करूंगा।
15 यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।
16 और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा, कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।
17 अर्थात सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता
है: तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा।
18 मैं तुम्हें अनाथ न छोडूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं।

8. प्रकाशित वाक्य 1: 1 (*से*;)

1 यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य जो उसे परमेश्वर ने इसलिये दिया, कि अपने दासों को वे बातें, जिन का शीघ्र
होना अवश्य है, दिखाए।

9. प्रकाशित वाक्य 21 : 1-4

1 फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और
समुद्र भी न रहा।
2 फिर मैं ने पवित्र नगर नये यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हिन के
समान थी, जो अपने पति के लिये सिंगार किए हो।
3 फिर मैं ने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में
है; वह उन के साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उन के साथ रहेगा; और उन का
परमेश्वर होगा।
4 और वह उन की आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न
पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।

10. प्रकाशित वाक्य 22 : 16, 17

16 मुझ यीशु ने अपने स्वर्गदूत को इसलिये भेजा, कि तुम्हारे आगे कलीसियाओं के विषय में इन बातों की गवाही दे:
मैं दाऊद का मूल, और वंश, और भोर का चमकता हुआ तारा हूं॥
17 और आत्मा, और दुल्हिन दोनों कहती हैं, आ; और सुनने वाला भी कहे, कि आ; और जो प्यासा हो, वह आए और
जो कोई चाहे वह जीवन का जल सेंतमेंत ले॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 554 : 1 (क्रिश्चियन)-4

… क्रिस्चियन साइंस ने खुलासा किया कि "आंख ने नहीं देखा," — यहां तक कि सभी का कारण मौजूद है, - ब्रह्मांड के लिए, मनुष्य का समावेश, ईश्वर के समान शाश्वत है, जो इसका दिव्य अमर सिद्धांत है।

2. 510 : 27-4

प्रकाश मन, जीवन, सत्य और प्रेम का प्रतीक है न कि पदार्थ का एक महत्वपूर्ण गुण। विज्ञान केवल एक मन को प्रकट करता है, और यह अपने स्वयं के प्रकाश से चमकता है और ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, जिसमें मनुष्य भी शामिल है, पूर्ण सद्भाव में। यह मन विचारों, अपनी स्वयं की छवियों, उप-विभाजनों का निर्माण करता है और अपनी

उधार ली गई रोशनी, बुद्धि को विकीर्ण करता है, और इसलिए पवित्रशास्त्र के वाक्यांश की व्याख्या करता है, "जिसका बीज अपने आप में है।"

3. 313 : 23-26

नाज़रेथ का यीशु सबसे वैज्ञानिक व्यक्ति था जो कभी भी दुनिया को तार-तार कर देता था। वह चीजों की भौतिक सतह के नीचे गिर गया, और आध्यात्मिक कारण पाया।

4. 315 : 6-10, 32-11

वह एक मन का जानता था और किसी अन्य के लिए कोई दावा नहीं करता था। वह जानता था कि शरीर के बदले अहंकार मन था और वह पदार्थ, पाप और बुराई मन नहीं थे; और इस दिव्य विज्ञान के बारे में उनकी समझ ने उन्हें उम्र का आधार बना दिया।

ईश्वरीय विज्ञान के तरीके को समझाते हुए और प्रदर्शन करते हुए, वह उन सभी के लिए मुक्ति का मार्ग बन गया, जिन्होंने उनके वचन को स्वीकार किया। उससे नश्वर जान सकते हैं कि बुराई से कैसे बचा जाए। विज्ञान को उसके निर्माता से जोड़ा जा रहा असली आदमी, नश्वर लोगों को केवल पाप से मुंह मोड़ने की जरूरत है और नश्वर स्वार्थ की दृष्टि को खोना है ताकि मसीह, वास्तविक व्यक्ति और भगवान के साथ उसके संबंध का पता लगाया जा सके, और दिव्य पुत्रत्व को पहचान सकें। मसीह, सत्य, यीशु के माध्यम से शरीर पर आत्मा की शक्ति को साबित करने के लिए प्रदर्शित किया गया था, - यह दिखाने के लिए कि सत्य को मानव मन और शरीर पर इसके प्रभावों, बीमारी को ठीक करने और पाप को नष्ट करने के द्वारा प्रकट किया जाता है।

5. 107: 1-14

वर्ष १ साइंस६६ में, मैंने जीवन, सत्य और प्रेम के क्रिएचरियन साइंस या ईश्वरीय नियमों की खोज की और अपनी खोज का नाम क्रिश्चियन साइंस रखा। वैज्ञानिक मानसिक उपचार के पूर्ण दिव्य सिद्धांत के इस अंतिम रहस्योद्घाटन के स्वागत के लिए भगवान ने कई वर्षों के दौरान मुझे विनम्रतापूर्वक तैयार किया।

यह अप्रत्यक्ष सिद्धांत इम्मानुएल के रहस्योद्घाटन की ओर इशारा करता है, "हमारे साथ भगवान," - संप्रभु कभी उपस्थिति, हर बीमार से पुरुषों के बच्चों को पहुंचाने "कि मांस के लिए वारिस है।" क्राइस्टियन साइंस के माध्यम से, धर्म और चिकित्सा एक दिव्य प्रकृति और सार से प्रेरित हैं; ताजा विश्वास और समझ के लिए दिया जाता है, और विचार भगवान के साथ खुद को बुद्धिमानी से परिचित कराते हैं।

6. 293: 28-31

क्राइस्टियन साइंस सत्य और उसके वर्चस्व, सार्वभौमिक सद्भाव, ईश्वर की पवित्रता, अच्छे और बुरे की बुराई को प्रकाश में लाता है।

7. 504: 12 (वहाँ)-14

... ऐसी कोई जगह नहीं है जहाँ सत्य, जीवन और प्रेम में ईश्वर का प्रकाश नहीं दिखाई देता है, लेकिन उनमें असीमता होती है और वे कभी भी मौजूद होते हैं।

8. 11: 22-25

चिकित्सा का दिव्य सिद्धांत सत्य के किसी भी साधक के व्यक्तिगत अनुभव में सिद्ध होता है। इसका उद्देश्य अच्छा है, और इसका अभ्यास किसी भी अन्य सेनेटरी विधि की तुलना में अधिक सुरक्षित और शक्तिशाली है।

9. 11: 9-21

क्रिश्चियन साइंस के फिजिकल हीलिंग अब परिणाम है, यीशु के समय के अनुसार, ईश्वरीय सिद्धांत के संचालन से, इससे पहले कि पाप और बीमारी मानवीय चेतना में अपनी वास्तविकता खो देते हैं और स्वाभाविक रूप से गायब हो जाते हैं और आवश्यक रूप से अंधेरा प्रकाश और पाप को सुधार के लिए जगह देता है। अब, अतीत की तरह, ये शक्तिशाली कार्य अलौकिक नहीं हैं, बल्कि सर्वोच्च प्राकृतिक हैं। वे इमैनुअल, या "भगवान हमारे साथ है," का संकेत हैं — मानवीय चेतना में मौजूद एक दिव्य प्रभाव और खुद को दोहराते हुए, अब जैसा कि वादा किया गया था, आ रहा है,

> कि बन्धुओं को छुटकारे का और
> अन्धों को दृष्टि पाने का सुसमाचार
> प्रचार करूं और कुचले हुओं को छुड़ाऊं।

10. 323: 32-6

छोटे बच्चे के रूप में बनने और नए के लिए पुराने को छोड़ने की इच्छा, रेंडरर्स ने उन्नत विचार के ग्रहणशील होने का सोचा। झूठे स्थलों को छोड़ने की खुशी और उन्हें गायब देखने के लिए खुशी, - यह स्वभाव परम सद्भाव को बढ़ाने में मदद करता है। भाव और आत्म की शुद्धि ही प्रगति का प्रमाण है। "धन्य हैं वे, जिन के मन शुद्ध हैं, क्योंकि वे परमेश्वर को देखेंगे।"

11. 572: 19-22

प्रकाशित वाक्य 21: 1 में हम पढ़ते हैं: —

फिर मैं ने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा।

12. 573: 3-2

रहस्योद्घाटन करने वाला हमारे अस्तित्व के विमान में था, जबकि अभी तक यह देखते हुए कि आंख क्या नहीं देख सकती, - जो कि बिना सोचे समझे अदृश्य है। पवित्र लेखन की यह गवाही विज्ञान में इस तथ्य को प्रमाणित करती है, कि एक मानव चेतना के लिए आकाश और पृथ्वी, उस चेतना को जिसे ईश्वर श्रेष्ठ मानते हैं, आध्यात्मिक हैं, जबकि दूसरे के लिए, एकात्म मानव मन, दृष्टि भौतिक है। यह निर्विवाद रूप से दिखाता है कि मानव मन क्या मायने रखता है और आत्मा राज्यों और चेतना के चरणों को इंगित करता है।

इस वैज्ञानिक चेतना के साथ एक और रहस्योद्घाटन किया गया था, यहां तक कि स्वर्ग से घोषणा, सर्वोच्च सद्भाव, कि भगवान, सद्भाव का दिव्य सिद्धांत, कभी पुरुषों के साथ है, और वे उनके लोग हैं। इस प्रकार मनुष्य अब एक दुखी पापी के रूप में नहीं, बल्कि ईश्वर के धन्य बच्चे के रूप में माना जाता था। क्यूं कर? क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी के सेंट जॉन के प्रति शत्रुता गायब हो गई थी, और इस झूठे अर्थ के स्थान पर आध्यात्मिक भावना थी, व्यक्तिपरक स्थिति जिसके द्वारा वह नए स्वर्ग और नई पृथ्वी को देख सकता था, जिसमें आध्यात्मिक विचार और वास्तविकता की चेतना शामिल है । यह निष्कर्ष निकालने के लिए शास्त्र सम्मत अधिकार है कि इस अस्तित्व की वर्तमान स्थिति में पुरुषों के लिए यह संभव है, और - यह कि हम यहाँ, और अब, मृत्यु, दुःख और पीड़ा के निवारण के लिए सचेत हो सकते हैं। यह वास्तव में पूर्ण क्रिश्चियन साइंस का पूर्वज है। दिल थाम लो, प्रिय पीड़ित, इस वास्तविकता के लिए निश्चित रूप से कुछ समय में और किसी तरह दिखाई देगा। अधिक दर्द नहीं होगा, और सभी आँसू मिटा दिए जाएंगे। जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यीशु के शब्दों को याद रखें, "का राज्य तुम्हारे बीच में है॥" यह आध्यात्मिक चेतना इसलिए एक वर्तमान संभावना है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6